भट्टारक श्रीभूषण

जीवन-परिचय : श्रीभूषण नाम के दो भट्टारकों का परिचय प्राप्त होता है। पहले श्रीभूषण भानुकीर्ति के शिष्य हैं। श्रीभूषण विक्रम संवत् 1705 आश्विन शुक्ल तृतीया को पट्टाधीश हुए और 19 वर्ष तक पट्ट पर प्रतिष्ठित रहे। दूसरे श्रीभूषण विद्याभूषण के शिष्य हैं। इनके पिता का नाम कृष्णशाह और माता का नाम माकुही था। इन्हें 'षट्भाषा-कवि-चक्रवर्ती' की उपाधि मिली थी। भट्टारक श्रीभूषण ने साहित्य और संस्कृति के प्रचार में अपूर्व योगदान दिया है।

भट्टारक श्रीभूषण का समय विक्रम की 17वीं शताब्दी है।

रचना-परिचय : श्रीभूषण की कई रचनाएँ होनी चाहिए, क्योंकि ये अपने युग के बहुत बड़े विद्वान थे। परन्तु अभी तक इनकी तीन रचनाएँ उपलब्ध हैं—

1. शान्तिनाथ पुराण : शान्तिनाथ पुराण में 16वें तीर्थंकर शान्तिनाथ का जीवनचरित्र वर्णित है। कथावस्तु 16 सर्गों में विभक्त है।

2. द्वादशांगपूजा : इसमें श्रुतज्ञान की पूजा की गयी है।

3. प्रतिबोधचिन्तामणि : इस ग्रन्थ में मूलसंघ की उत्पत्ति की कथा दी गयी है।